International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)

Impact Factor 5.401 Volume 5, Issue 12, December 2018

Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

MkW0 HkkLdjkpk;Z f=ikBh }kjkfojfprukVdLusglkSohje~ esaik= ,oapfj=&fp=.k

DHARAM SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF SANSKRIT
GOVT COLLEGE BHATTU KALAN (FATEHABAD)

DRBHASKARACHARYA TRIPATHI DWARA VIRACHIT NATAK SNEHSAUVEERAM ME PATRA AVAM CHARITRA - CHITRAN

Hkkjrh; ukV; lkfgR; eurk ¼uk;d½ ukVd dk ,d egRoi.kZrRoekukx;kgAvk/kfudukV; leh{kk eukVd d bl rRo dk ik= ,opfj= fp=.k d :ikefoopufd;ktkrkgALusglkSohje नाटकचरित्र–चित्रण की दृष्टि से एक महत्वपूर्णनाटकहै। डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी ने viuukVdLusglkSohje eik=k dk o.ku bl idkjfd;kg %&

lkk= ,opfj= fp=.k &dFkkoLrq d cknukVd dk egRoi.kZrRourkvFkkr ik= है।निस्सन्देहकथावस्तुमेंपात्रो का चरित्र विशेष रूप से सहायकहोताहै। यदिवस्तु–भवन के निर्माणमें ?kVuk, bVk dk dkedjrhgrkik= bubVkdktkMuokyklheUVgAiR;d :iddkjviu :id e शीलनिरूपण या चरित्र चित्रण के द्वाराहीअपनेविचारोंऔरसिद्धातोंकोप्रतिपादितकरताहै।पात्रों के अभावमें :idk d vfLrRo dh dYiukHkhugh dh tkldrhA :id d ik= ftruHkhltीवतथासशक्तहोंगे, :idmrukghlQygkxk।पात्रों की सजीवता उनके शीलपरनिर्भरकjतीहै। शील या चरित्र हीनाटक का मूलआधारहोताहैऔरउसी के द्वारा रूपककारअपनेमनोगतसन्देशप्रसारितकरताहैA ^Hkfedkfkek;kftrk% ik=%[1]vFkkr ukVdi;kDrkviuvfHkurkvkdkukVd d ik=k d vu:Ik mud okfpd] vkfxdlkfÙodvkjvkgk;vfHku; djrkgftlli=k dk pfj= vfHk0;DrgkrkgA

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

:id dh ?kVuk,rFkk ik=k d fØ;k&dykiijLij ,d nljdkiHkkfordjrg, dFkkoLr का निर्माणकरतेहैंऔरकथाानककोगतिशीलबनातेहैं। घटनाओंमेंतथापात्रों के शीलमेंकार्यकारणlEcU/k ftrukgh0;ofLFkrgkxk :id mrukgh lQyekuktk,xkAiLrrukVdeनायिका शबरीहैऔरअन्य ik=ksaमेंमल्लिका, मुद्गल, शालिहोत्र, राम, हनुमान, सुग्रीव, मतंग, लक्ष्मणआदि का वर्णनकियागयाहै। bl ukVd d ie[k ik= g %&

¼d½ ik=&ifjp;

1- शबरी & ukVd dh ukf;dk
2- efYydk & शबरी की सहेली
3- jke & vkjk/; uk;d
4- y{e.k & jke d lg;kxhvut
5- gueku & lxho d lg;kxh
6- lxho & ie[k okuj
7- enxy & मतंग का शिष्य (विदूषक)
8- erx & महषि
9- शालिहोत्र – erxkJe dk riLrh
10- Rkkil & Økpkj.; dk lk/k
11- शाकुनिक & tuLFkku dk cgfy;k
12- dykih & vkJee;j
13- काकभुशुण्डि– jkeHkDri{kh
14- dkeUnfd & vfrfFkriLoh
15- uVh
16- l=/kkj

¼[k½ ik=k dk pfj= fp=.k&

1- L=hik=&

1 शबरी

शबरीप्रस्तुतनाटक की नायिकाहै।वहदयामयीऔरपरम धन्य नारीहै।उसनेवन्यफलविशेषकरcj d Qyi Ùkh rFkkNkyvkfn l vlk/; jkxk dh fpfdRlkvkjvk/;kfRedk d dkj.kviu le; elepnशमेंदूर–दूरविशिष्ट ख्यातिअर्जितकरलीथी। शबरीभhydU;kgkdjHkhvR;UrfLuX/k ,o :iorhFkhdkeUnfd d vulkj %

dkfpUeYyh&ifjeye;hdhj.kk lkexk{kh

श्यामावामास्फटिकसुदतीवेल्लितस्वर्णकेशी,

प्रव्रज्यायैवनमुनगताकामिनी शङ् कनीया

विश्वामित्रं छलयितुमनानूतना मेनकेव।[2]

शबरीमेंत्यागस्नेहऔरभक्ति की भावनाकूट–कूटकरभरीहुईहै। शबरीमेंत्याग की भावनाभीहै।----------

Lodh; ikf.kxg&i.;dky

विमृद्य वेदीं शबरी क्षणेन,

iPNUR;gkNkxfoengr

iykf;rke.Mirk oukyheA[3]

वहराम की जन्म–जन्म की अनुरागिणी है।वहराम की प्रशंसाकरतीhgbdjrhg&

शरीरीश्रृंगारों मधुरफलदः कल्पविरVih

स जिष्णुर्लोकानांस्मृतिमुपगतः पापशमनः

euhUnk.kki tki.k;ifjikVhe/kj;uA

सखि श्वासेममचरतिचीराजिनधरः।[4]

ogdikyHkhgAenxy d }kjkiEik ljkojijihVtkuijHkhml {kekdjnrhgA शबरीमेंकृतज्ञताभीकूट&dVdjHkjhहुईहै।श्रीराम शबरीकोअपनीही शरीरधारिणी riL;kdgdjxkjokfUordjrg&

शबरीमेंतपः शक्तिः काननेपूर्वसंस्थिता

}hi}hikf;rk nh[kick/; foy; xrkA[5]

2- efYydk

डॉ० त्रिपाठीजी ने प्रस्तुतनाटकमेंमल्लिकाको शबरी की सहेली के रूपमेंचित्रित कियाहै।मल्लिका ३kcjh d ihN&ihN txy etkrhgtcogfookgonh dk R;kxdjd txy मेंभागनेलगतीहै।वहअपनीसहेल शबरीकोवापसचलने के लिए कहतीहैलेकिन शबरीमल्लिका की बातकोनहींमानती।मल्लिका धैर्यशालिनीभीहै। शबरीजबरोनेलगजाती ह

rkogm lviudk lEHkkyudkdgrhgAogukf;dkdkifrfnudलिभिः शयिताऽसि' कहकर यह व्यक्तकरतीहैकि शबरी की अत्यन्तअन्तरंगबालसरवीमल्लिकाहीथी।

पुरूष पात्र

1- jkeiLrrukVd d vkjk/; ukVdgALugl kohje ejkeloiFkeipevdemifLFkrgkrgA tc शबरीतपस्याकररहीहाrhgAfdUr mud lUnHkevuLej.kkRedmYy[k ijukVdevk|ki।न्तवर्तमानहै।वे शबरी की तपस्या का अभिनन्दनकरतेहुए कहतेहैं–

देवी।दाशरथीरामः श्रीमत्यास्तपः संविदामभिनन्दति।[6]

वेसीता की खोजमेंवानरसेना की सहायतालेतेहैं।राम शबरी की भक्ति की प्रशंसाकरतेहैं।वे शबरी के मस्तकपरपुष्पमाल्य डालतेहुऐपरिक्रमा के लिए निकलजातेहैं।नाटdeJhjke /kjknkÙkuk;d d रूपमेंउपन्यस्तकिए गए हैं।नाटक के प्रारंभ से हीउनमेंईश्वरीय तेजस्विताभीरेखांकित की गईहै।

mnkgj.kkFk&

प्रशमितान्तर–तान्तरसोमिभिः

स विषयीक्रियते न समाधिभिः,

rnoykddrNyfun;k

fde nxpyehfyren;K[7]

2- y{e.k %&

y{e.kdkjke d lg;kxhvut d :lkelefpr :k l fpf=r fd;kx;kgA लक्ष्मणराम के साथसीता की खोजमेंपरिक्रमाकरतेहैं।वह शबरी की प्रशंसाकरताहुआकहताहैकि–

vioHknlfEHkUukt kr tkfrirkkfuuh

rikyufodkjkpr lrlldkjeo lkA[8]

y{Ek.kjkedkdgrgfdHk;k ,lk ?kVukØeigyugh n[kk&

पुष्पासारः सभृड़गस्तिरयति शबरीदिव्यसौरभ्यसारः

lk·; dh.kkolkn% LQjfrljiFknUnHkhukfuukn%]

धूमच्छायात्मकानांप्रसरतिविसरः कोऽपिपिष्टातकानां

भूमेरूत्कम्पितायाविशति च विवरंवत्सला कायमाया।[9]

3-erx

मतंगकोप्रस्तुतनाटकमें एक महर्षि के रूप्efpf=r fd;kx;kgAmudkpfj= ikjEifjdxfjek d vudygAoloiFkegekjlEe[k f}rh; vdemifLFkrgkrgAx: वेदिकापरमहर्षिमतंगओर ऋषिकुल के साथउपदेश्कमुद्रामेंउपस्थितहैं।मतंगही शबरी से उसकापरिचय पूछतेहैं।वेसाकेत–प्रवास से लौटकर शबरीको यह समाचारसुनातेहैंकिरामकुछहीदिनkerEgkjnjoktijifFkd :ievk,xA

4-enxy

मुद्गलकोप्रस्तुतनाटक के विदूषक के रूपमेंचित्रित कियागयाहै।वहमतंग ऋषि का शिष्य है।सर्वप्रथमवह छत की लकड़ीमेंचोटी बाँधकरमाहेश्वरसूत्र रटताहुआ द्वितीय अंक के उक्तियों से पाठक एवंदर्शकों का vPNkeukjtudjrkgAmlu पम्पासरोवरपरभीललड़की शबरी की जमकरपिटाईकी।मुद्गलकोबुखारहोजाताहैऔरमतंग ऋषिउसे शबरी से क्षमा याचना के लिए कहतेहैं।मुद्गल शबरी से क्षमा याचनाकरताहै।
rrh;kvd d ikjEHkeiu% मुद्गलजपमालाफिराताहुआप्रवेशकरताहै।उसकीहास्यप्रदउक्तियाँ पाठक एवंदर्शक का cgreukjtudjrhg&

पिनाकद्रुहोदर्शनार्थंसमेताः
i;krk u d i.;lkdrHkfee]
अजाकण्ठलोलस्तनाकारशीलो
u xUrleFk% [kykenxyk·HkrA

मुद्गलडरपोकभीहै।जबहनुमानऔरसुग्रीव शबरी की चिकित्साकुटीपरपहुँचतेहैंतोवहउन्हें n[kdjdkiuyxrkgvkjfNiu dk i;kldjrkgA

5- **भाालिहोत्र**

शालिहोत्र मतंगाश्रम का तपस्वीहै। यह भीसर्वप्रथम द्वितीय अंक के प्रारम्भमेंहीहमारेसम्मुख आताहै।वह शबरीकोअपनीबहनमानताहै।मतंग ऋषि के साथवहभीसाकेतनगरीपहुँचताहै।रास्तेमेंवहमतंग ऋषि से नर्मदा के दक्षिण से शीघ्रविन्ध्य ikjdjyu d fy, dgrkgA शालिहोत्र शिष्टाचार का पालनकरताहैइसलिए वहमहर्षि का अत्यन्तविश्वासपात्र है।वह शबरी की प्रशंसाकरताहुआकहताहैकिः–

fNUufNUuoYdoklkolkuk

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

भूयः प्रह्वा कृष्णसाराऽ- xuo]
rUoh l ;cU/kjkoU ;ohFkh
वक्त्रश्वासैर्माजयन्ती लुलोके ।[10]

ogvkfrF;&lRdkjeHkhfui.kgA tcguekuvkjlxhofpfdRlkकुटीपरपहुँचतेहैंतो शालिहोत्र mudkfof/kor lRdkjdjrkgA

6- dkeUnfd

MkO f=ikBh u dkeUnfddk ,d vfrfFkriLoh d :Ikefpf=r कियाहै।सर्वप्रथमवहवेदिकापरमहर्षिमतंगऔरऋषिकुल के साथ द्विRkh; vdegekjlEe[k दृष्टिगोचरहोताहै।कामन्दकिहीमतंगऋषिकोपम्पातट का वर्णनबतलाताहुआकहताहै–

[kkuhHkrnUrjk.kkdeh.kk
पम्पानीरेनीलशैवालगर्भे,
LrkdrufHkYyckyk·f·· ey
ruUnJhfueyk··Hkk p ruA[11]

ogijevkKkdkjhHkhgA

7-gu|eku

iLrrukVdeguekudklxho d lg;kxhokuj d :Ikefpf=r fd;kx;kgAguekudoyचतुर्थअंकमेंसुग्रीव के साथहमारेसम्मुख आतेहैं।हनुमान शबरी की बेरफलों की मन्त्राक्षरयुक्तचिकित्सामेंविश्वास रखतेहें, इसीलिए rkolxhodkogkydjvk,AoशबरीdkviuvUreuvkjlk/kuk dh tuuhekurgALuglkohje d ipevdeHkherxkJe l vkx dh ;k=k dju d पूर्वरामहनुमान की वीरताऔर उनके द्वारा शैशवकालमेंसूर्यको मुख में रख लेने का Lej.kdjrg&

rrbu&doyuefge&iou lr lgdr&
cfye[kcyifjordfiifrjfifuolfrA

8- lxho

LkxhodkiLrrukVdegueku d lFkokujuk;d d :Ikefpf=r fd;kx;kgAloiFkeसुग्रीवभीचतुर्थअंकमेंहीहमारेसम्मुख आतेहैं।वे शबरी की भक्तिमेंपूराविश्वास रखतेहैं, इसलिए हीवेचिकित्सा के लिए शबरी के समीपजातेहैं।वहसोने के कंगनलिए हाथजोड़करहनुमान के साथ शबरीकोउनकीकृतज्ञताप्रकटकरतेहुए कहतेहैं–

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

एतौसुवर्णवलयौनिशिसूर्यभासौ

n0;konkU;dj;kfofuo| nkl k

9- rkil %

Mk0 f=ikBh u iLrrukVderkildkØkpkj.; d lk/k d :lkefpf=r कियाहै।वहअपनेइलाज के लिए शबरी के समीपपहुंचताहै।वह शबरीकोअपनारोगबतातेहुआकहताहै–

देवी।अहंक्रौंचारण्यतापसोमासद्वयेनकासरोगपीड़ितोऽस्मिअनुगृह्णीष्वचिकित्सयkA

10- शाकुनिक

शाकुनिककोभीप्रस्तुतनाटकमेंजनस्थान के बहेलिये के रूपमेंचित्रित कियागयाहै। यह Hkhvfrlkj ,ook;,विकार की चिकित्सा के लिए शबरी के पासआताहै।

11- dykih

dykihdkiLrrukVdevkJe d e;j d :iefpf=r fd;kx;kgAogdoyipevdeghgekjlEe[k vkताहै।वह शबरी द्वारापालित द्वार रक्षकहैतथाभक्तिमतीदेवी के दर्शन से अपनेआपकोकृतार्थ समझताहैओरकहताहैकि–

,कान्तेषुजपोन्मिषद्रदपटीसवताश्रुसंचारया

सत्यं द्वादशवत्सरान् क्षपितयानोरामयावेदितम्,

foJkC/k gflrdFkfde op% fd ok dy tfYir

dk jkf=fnolL; d% कुतउषाकुत्रास चन्द्रोदयः

12- काकभुशुण्डि

काकभुशुण्डिप्रस्तुतनाटकमेंराम के अनन्य सहयोगhi{kh d :lkegekjlEee[k आताहै।वहराम का सच्चाभक्तहैऔररामतथा शबरी की आJeelgk;rkdjrkgAogjke dk fuR; lodgA

समूचेवनवासकालमेंकाकभुशुण्डि का श्रीराम के साथ–साथjgu dk o.kuvkjekU;rk इस नाटक की एक उल्लेखनीय विशेषताहै।वस्तुतः अनेकरामकथा–परककाव्यों एवंनाटकोंमेंडॉ त्रिपाठी u igyhckjokYehfdjkek;.k l ,lसन्दर्भप्राप्तकियाहैजिससेरामभक्तकाकभुशुण्डिपात्र एक

निरन्तरसहयोगीपार्षद के रूपमें नए सिरे से प्रतिष्ठितहोसकाहै।नाटक d ijkokd e bl rF; dk mYy[k g&

okYehfdjkek;.k e ,lklUnHkfeykfdjke dh ou;k=k edkbdkdjktvkx&vkxmMrg, mUgvfxeekx के संकेतदियाकरतेथे। शबरीआश्रम के पूर्वकबन्ध jk{kl dk vkØe.k l oghlfprdjrg&

एष वंचुलको नाम पक्षीपरमदारूणः

vko;ोर्विजयं युद्धे शंसन्निव विनर्दति।[12]

MkO f=ikBhdkVhdkvkeopydh dk vFkd.Bokyh vkjHkkjrh; if{k;k dh ifjpk;dk“The Book of India Birds” emldk"King Crow” d :lkevfHkKkufeyrkgA

bl idkj MkO f=ikBh u iLrrukVdelz=/kkjvkjuVhlfgr 16 ik=k d pfj=kduelo= उदात्तआदर्श रखा हैं यथासंHkomUgku ;ghi;klfd;kgAfdik=k dkpfj= अत्यन्तआदर्शऔरप्रांचलप्रदर्शितकियाजाए।इसीउद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंनेकथानकमेंपरिवर्तनकरनेमेंतनिकभीसंकोचनहींकियाहै।डॉ त्रिपाठी के चरित्रांकनअपनीविशदता एवंउत्कृष्टRkk d dkj.klnoLej.kfd;tk,xA

lkknVhdk

1 अभिनय नाट्ययास्त्र प्रकाशन कि0 म0 इलाहाबाद।

2Luglkohje vd 2 श्लोक 7

3 Luglkohje vd 1 श्लोक 3

4 Luglkohje vd1 श्लोक 5

5 Luglkohje vd1 श्लोक 5

6 स्नेहसौवीरम् प0 अ0 ग0 भा0 श्लोक 9 से आगे

7 Luglkohje vd1 श्लोक 7

8 स्नेहसौवीरम् अंक 5 श्लोक 15

9 स्नेहसौवीरम् अंक 5 श्लोक 20

10 स्नेहसौवीरम् अंक 5 श्लोक 22

11 Luglkohje vd4 श्लोक10

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

12 ok0 jk0 3-69-23

lUnHkZ lwph

1 ukV;शास्त्र भरतमुनि
2 Lug lkohjeukVd